पाठ 54

1. परमेश्वर के वचन पर विश्वास करने के बजाय, फरीसी और कानून के शिक्षक क्या देखना चाहते थे?

-वे एक चमत्कारी चिन्ह देखना चाहते थे।

2. फरीसी और कानून के शिक्षक अधिक चमत्कारी चिन्ह देखने के लिए क्यों कह रहे थे?

-क्योंकि वे यह नहीं मानते थे कि यीशु उद्धारकर्ता परमेश्वर थे।

3. यदि हम कहें कि हम विश्वास करेंगे कि परमेश्वर का वचन तभी सत्य है जब हम कोई चमत्कारी चिन्ह देखेंगे, तो हम क्या कह रहे हैं?

-कि परमेश्वर का वचन झूठ है।

4. एकमात्र चिन्ह क्या था जिसे यीशु ने कहा था कि वह लोगों को देगा?

-योना का चिन्ह।

5. योना का चिन्ह क्या था?

-जैसे योना तीन दिन और तीन रात तक बड़ी मछली के पेट में रहा, वैसे ही यीशु भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के पेट में रहेगा।

-जैसे परमेश्वर ने योना को तीन दिन और तीन रात के बाद बड़ी मछली के पेट से बाहर निकाला, उसी तरह परमेश्वर भी यीशु को तीन दिन और तीन रात के बाद पृथ्वी के पेट से बाहर निकालेगा।

6. यीशु ने क्यों कहा कि यहूदी नीनवे के लोगों से अधिक दुष्ट थे?

-क्योंकि नीनवे के लोगों ने योना की शिक्षा पर पश्चाताप किया, और यहूदियों ने यीशु, परमेश्वर उद्धारकर्ता की शिक्षा पर पश्चाताप नहीं किया।

-फरीसी यीशु से नफरत क्यों करते थे?

-क्योंकि यीशु ने उन्हें बताया कि वह उद्धारकर्ता परमेश्वर है।

-फरीसियों ने सोचा कि यीशु केवल एक आदमी था।

-फरीसियों ने सोचा कि कोई भी व्यक्ति यह न कहे कि वह ईश्वर है।

-फिर फरीसी यीशु से नफरत क्यों करते थे?

-क्योंकि यीशु ने उनसे कहा था कि वे पापी हैं, और यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा।

-फरीसियों को विश्वास नहीं था कि वे पाप में पैदा हुए हैं।

-फरीसियों का मानना था कि उन्होंने अपने पूरे जीवन में कभी पाप नहीं किया।

-फिर फरीसी यीशु से नफरत क्यों करते थे?

-क्योंकि बहुत से लोग यीशु का अनुसरण करते थे, और फरीसी यीशु से ईर्ष्या करते थे।

-फरीसियों ने सोचा कि लोगों को उनकी बात सुननी चाहिए, न कि यीशु की।

-फरीसियों ने सोचा कि लोगों को उनका अनुसरण करना चाहिए, न कि यीशु का अनुसरण करना चाहिए।

-चूंकि फरीसी यीशु से घृणा करते थे, वे लगातार यीशु को यह देखने के लिए देख रहे थे कि क्या वह परमेश्वर की किसी एक आज्ञा को तोड़ देगा।

-यदि यीशु परमेश्वर की किसी एक आज्ञा को तोड़ता, तो फरीसी क्या करते?

-वे यीशु को मौत की सजा देंगे।

-क्या यीशु परमेश्वर की किसी एक आज्ञा को तोड़ेगा?

-नहीं।

-यीशु कभी भी परमेश्वर की किसी एक आज्ञा को क्यों नहीं तोड़ेंगे?

-क्योंकि यीशु परिपूर्ण है।

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-क्योंकि यीशु पाप रहित है।

-क्योंकि यीशु ने हर चीज में पिता परमेश्वर की बात मानी।

-जबकि यीशु ने परमेश्वर की बात मानी, उसने फरीसियों की बात नहीं मानी।

-यीशु ने फरीसियों की बात क्यों नहीं मानी?

-क्योंकि फरीसियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को बदल दिया था।

-फरीसियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को कैसे बदला?

-फरीसियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं में अपने स्वयं के नियम जोड़े, जिससे परमेश्वर की आज्ञाएं झूठी हो गईं।

-जब फरीसियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं में अपने स्वयं के नियम जोड़े, तो उन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को झूठ के रूप में बदल दिया।

-एक नियम जो फरीसियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं में जोड़ा, वह यह था कि किसी को भी सब्त के दिन किसी अन्य व्यक्ति को चंगा करने की अनुमति नहीं थी।

-फरीसियों ने इस व्यवस्था को परमेश्वर की आज्ञाओं में क्यों जोड़ा?

-क्योंकि उन्होंने कहा था कि किसी को चंगा करना काम करना है, और यह कि परमेश्वर नहीं चाहता था कि वे सब्त के दिन काम करें।

-जिस व्यवस्था को फरीसियों ने जोड़ा, उसने परमेश्वर की आज्ञा को झूठा बना दिया।

-एक सब्त के दिन, यीशु एक आराधनालय में गया।

आइए पढ़ें मरकुस 3:1-2

1-दूसरी बार यीशु आराधनालय में गया, और वहां एक व्यक्ति का हाथ सूजा हुआ था।

2-फरीसी यीशु पर दोष लगाने का कारण ढूंढ रहे थे, इसलिए उन्होंने उसे करीब से देखा कि क्या वह सब्त के दिन उसे चंगा करेगा।

-जब यीशु आराधनालय में गया, तो वहां एक सिकुड़ा हुआ हाथ था।

-फरीसी यीशु को करीब से क्यों देख रहे थे?

-क्योंकि फरीसी देखना चाहते थे कि क्या यीशु सब्त के दिन आदमी को चंगा करेगा।

-क्या परमेश्वर नाराज होंगे अगर यीशु सब्त के दिन आदमी को चंगा करेंगे?

-नहीं।

-अगर यीशु सब्त के दिन आदमी को चंगा करेगा तो परमेश्वर नाराज क्यों नहीं होंगे?

-क्योंकि सब्त के दिन किसी को चंगा करना काम नहीं है।

-क्योंकि परमेश्वर पिता चाहता था कि यीशु उस आदमी को चंगा करे।

-यीशु ने क्या किया?

आइए पढ़ें मरकुस 3:3-5

3-यीशु ने सिकुड़े हुए हाथ वाले व्यक्ति से कहा, "सब के सामने खड़े हो जाओ।"

4-तब यीशु ने उन से पूछा, सब्त के दिन कौन सा उचित है: भलाई करना या बुरा करना, प्राण बचाना या मारना? लेकिन वे चुप रहे।

5-यीशु ने क्रोध से उनकी ओर देखा, और उनके हठीले मन से बहुत दुखी होकर उस से कहा, अपना हाथ बढ़ा। उसने उसे बढ़ाया, और उसका हाथ पूरी तरह से ठीक हो गया।

-यीशु फरीसियों से क्यों नाराज़ थे?

-क्योंकि यीशु ने देखा कि उनके हृदय जिद्दी थे।

-यीशु को कैसे पता चला कि उनके दिल जिद्दी थे?

-क्योंकि यीशु हर व्यक्ति के हर दिल में देख सकते हैं।

-क्योंकि यीशु हर व्यक्ति के हर दिल को जानता है।

-यीशु ने फरीसियों के दिलों में देखा, और देखा कि वे वह नहीं सुनना चाहते जो परमेश्वर उन्हें सिखा रहा था।

-परमेश्वर जो हमें सिखाते हैं, उसे न सुनना बहुत गलत है।

-फिरौन यह नहीं सुनना चाहता था कि परमेश्वर उसे क्या सिखा रहा है, और परमेश्वर ने उसे मौत की सजा दी।

-जंगल में इस्राएली यह नहीं सुनना चाहते थे कि परमेश्वर उन्हें क्या सिखा रहा है, और परमेश्वर ने उन्हें मौत की सजा दी।

-परमेश्वर उन सभी को मौत की सजा देगा जो परमेश्वर उन्हें सिखाते हुए नहीं सुनते हैं।

-क्या यीशु ने सिकुड़े हुए हाथ से आदमी को चंगा किया?

-हां।

-कौन अकेला एक सिकुड़े हुए हाथ को पूरी तरह से ठीक करने में सक्षम था?

-परमेश्वर।

-यीशु ने सिकुड़े हुए हाथ से उस आदमी को कैसे चंगा किया?

-बस बोलकर।

-शुरुआत में परमेश्वर ने पृथ्वी को कैसे बनाया?

-बस बोलकर।

-जिस तरह यीशु ने बोलकर ही पृथ्वी की रचना की, उसी प्रकार यीशु ने भी सिकुड़े हाथ से बोलकर ही मनुष्य को चंगा किया।

-जब यीशु ने उस आदमी को चंगा किया, तो फरीसियों ने क्या किया?

आइए पढ़ें मरकुस 3:6

6-तब फरीसी बाहर गए और हेरोदियों के साथ षडयंत्र करने लगे कि वे यीशु को कैसे मारें।

-फरीसी आराधनालय से बाहर निकल गए, और साजिश करने लगे कि वे यीशु को कैसे मार सकते हैं।

-फरीसियों ने किसके साथ यीशु को मारने की साजिश रची?

-हेरोडियन।

-हेरोडियन कौन थे?

-हेरोडियन वे लोग थे जो राजा हेरोदेस का अनुसरण करते थे।

-हेरोडियन भी नहीं मानते थे कि यीशु उद्धारकर्ता परमेश्वर थे।

-यह राजा हेरोदेस राजा हेरोदेस का पुत्र था जिसने यीशु को मारने की कोशिश की थी जब वह छोटा लड़का था।

-जब लोगों ने यीशु के चमत्कारों के बारे में सुना, तो उन्होंने क्या किया?

आइए पढ़ें मरकुस 3:8

8-जब उन्होंने सुना कि यीशु क्या कर रहा है, तो यहूदिया, यरूशलेम, इदूमिया, और यरदन के पार और सूर और सैदा के आसपास के क्षेत्रों से बहुत से लोग उसके पास आए।

-बहुत से लोग यीशु के पास आए।

-वे यीशु की शिक्षा सुनने आए थे।

-वे अपनी बीमारियों से ठीक होने आए थे।

-वे जानते थे कि यीशु उन्हें चंगा करने में सक्षम थे।

-केवल परमेश्वर ही हमें ठीक करने में सक्षम हैं।

-चूंकि यीशु को देखने के लिए कई लोग आए, वहां जल्द ही भीड़ हो गई।

आइए पढ़ें मरकुस 3:9-10

9-भीड़ के कारण यीशु ने अपने चेलों से कहा, कि उसके लिये एक छोटी सी नाव तैयार रखो, कि लोग उस पर भीड़ न लगाएं।

10-क्योंकि उस ने बहुतोंको चंगा किया था, यहां तक कि रोगग्रस्त लोग उसे छूने के लिथे आगे बढ़ रहे थे।

-बहुत से रोगग्रस्त लोग यीशु के पास आ रहे थे, और वे यीशु को छूने मात्र से ही ठीक हो रहे थे।

-चूंकि भीड़ उसे छूने के लिए आगे बढ़ रही थी, यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि अगर लोग उसे पानी में भर दें तो एक नाव तैयार करें।

-यीशु जैसा कोई कभी नहीं हुआ।

-यीशु सब से बड़ा है।

-यीशु को देखकर राक्षसों ने क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 3:11

11-जब-जब दुष्टात्माएँ उसे देखतीं, तब वे उसके साम्हने गिर पड़तीं और चिल्लातीं, “तू परमेश्वर का पुत्र है।”

-राक्षसों ने यीशु को क्या कहा?

-उन्होंने उसे परमेश्वर का पुत्र कहा।

-दुष्टात्माओं ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र क्यों कहा?

-क्योंकि राक्षसों को पता था कि यीशु पिता परमेश्वर की ओर से आया है।

-हालांकि लोगों को यह नहीं पता था कि यीशु पिता परमेश्वर की ओर से आया है, दुष्टात्माएं जानती थीं कि वह उद्धारकर्ता परमेश्वर है।

-राक्षसों को कैसे पता चला कि यीशु परमेश्वर थे?

-क्योंकि शुरुआत में राक्षस अच्छे स्वर्गदूत थे जिन्होंने दुष्ट बनने से पहले स्वर्ग में यीशु की सेवा की और शैतान का अनुसरण किया।

-सभी राक्षसों को पता है कि यीशु ही परमेश्वर हैं।

-हालांकि, राक्षस नहीं चाहते कि आप यीशु पर विश्वास करें।

-दुष्टात्माएँ क्यों नहीं चाहतीं कि आप यीशु पर विश्वास करें?

-क्योंकि राक्षस नहीं चाहते कि आप उनकी शक्ति से बच जाएं।

-यदि आप यीशु पर विश्वास करते हैं, तो यीशु आपको राक्षसों की शक्ति से मुक्ति दिलाएगा।

-यीशु ने राक्षसों को क्या आज्ञा दी?

आइए पढ़ें मरकुस 3:12

12-लेकिन यीशु ने उन्हें सख्त आदेश दिया कि वे यह न बताएं कि वह कौन है।

-यीशु ने राक्षसों को आज्ञा दी कि वह किसी को न बताएं कि वह कौन था।

-यीशु क्यों नहीं चाहते थे कि दुष्टात्माएं बताएं कि वह कौन थे?

-यीशु चाहता था कि लोग उसके कहे अनुसार उस पर विश्वास करें, न कि दुष्टात्माओं के कहने के कारण।

-जैसे यीशु चाहते थे कि लोग उसके वचनों के कारण उस पर विश्वास करें, परमेश्वर चाहता है कि हम सभी परमेश्वर के वचन के कारण यीशु पर विश्वास करें।

-जब यीशु लोगों को चंगा कर चुका, तो वह एक पहाड़ पर चढ़ गया।

आइए पढ़ें मरकुस 3:13-19

13-यीशु ने पहाड़ पर चढ़कर अपक्की अपक्की अपक्की अपक्की अपक्की इच्छा की, और वे उसके पास आए।

14-उसने बारहों को नियुक्त किया - उन्हें प्रेरित नियुक्त किया - ताकि वे उसके साथ रहें और वह उन्हें प्रचार करने के लिए भेज सके

15-और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार प्राप्त करना।

16-ये बारह हैं जिन्हें उस ने नियुक्त किया: शमौन (जिसका नाम उस ने पतरस रखा);

17-जब्दी का पुत्र याकूब और उसका भाई यूहन्ना (उसने उनका नाम बोअनर्जेस रखा, जिसका अर्थ है गर्जन के पुत्र);

18-एंड्रयू, फिलिप्पुस, बार्थोलोम्यू, मत्ती, थोमा, हलफई का पुत्र याकूब, थद्देयुस, शमौन जोशीला

19-और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसके साथ विश्वासघात किया।

-उन लोगों में से, जिन्होंने उसका अनुसरण किया, यीशु ने अपने विशेष शिष्य बनने के लिए कितने लोगों को चुना?

-बारह।

-इन बारह आदमियों को क्या कहा जाता था?

-प्रेरित।

-यीशु ने जिन प्रेरितों को चुना, वे अच्छी तरह पढ़ना-लिखना नहीं जानते थे और न ही उनके पास ज्यादा पैसा था।

-यीशु ने ग्यारह प्रेरितों को चुना क्योंकि वे उस पर विश्वास करते थे।

-जिन लोगों को यीशु ने चुना उनमें से एक को यहूदा कहा जाता था।

-यहूदा ने कहा कि वह यीशु पर विश्वास करता था, लेकिन वह केवल अपने होठों से कह रहा था।

-अपने दिल में, यहूदा को यीशु पर विश्वास नहीं था।

-अन्य ग्यारह प्रेरितों को यह नहीं पता था कि यहूदा यीशु में विश्वास नहीं करता था, लेकिन यीशु जानता था।

-यीशु यह भी जानता था कि यहूदा एक दिन उसके साथ विश्वासघात करेगा।

-हम लोगों को धोखा देने में सक्षम हो सकते हैं।

-हम यहूदा जैसे लोगों को धोखा देने में सक्षम हो सकते हैं, और कह सकते हैं कि हम ईश्वर में विश्वास करते हैं।

-लेकिन हम परमेश्वर को कभी धोखा नहीं दे सकते।

-परमेश्वर हमारे दिल में देखता है।

-परमेश्वर जानता है कि क्या हम यीशु पर अपने दिल से विश्वास करते हैं, या हम इसे अपने होठों से कह रहे हैं।